

17, 1. यं ब्राह्मणमनूचानं यशो नैकं Ait. Br. 3, 23. अयोगक्षेमा यज्ञमानमृच्छन्
 Cat. Br. 11, 4, 2. यो वै न सुनोति न यतते तं निर्हतिर्हृच्छति 7, 2, 1, 3.
 पोदा ऽधर्मस्य कर्तारं पादः सान्निध्यामृच्छति M. 8, 18. MBh. 3, 1159. तम्-
 हृच्छति न संपदः BHATT. 18, 5. — 3) bedienen (परिचरणे) NAIGH. 3, 5.

— अय, अयार्हति Vor. 2, 3.

— अयि 1) zu Jmd kommen, heimsuchen: ततः सर्वाणि भूतानि कालो
 ऽभ्यर्हति शैशिरः MBh. 3, 11875. — 2) gegen Etwas (acc.) anstreben, zu
 bewältigen suchen: विद्युद्रूपो मङ्गधोरामाकाशे मङ्गतो गदाम्। शौरैर्बुभि-
 रभ्यर्हति MBh. 3, 11726.

— आ in Etwas (Schaden) gerathen, erlangen, theilhaftig werden:
 पापमार्हत्त्वकामस्य कर्ता AV. 2, 12, 5. Ait. Br. 2, 31. वेपनो ह वा स्याद-
 न्यां वार्तिमार्हत्त्वं Cat. Br. 4, 5, 1, 2. यदा इदं किं चार्हति वरुण एवेदं सर्व-
 मारपयति 4, 5, 7, 8, 7, 2, 16. क्षेमामार्हति MBh. 3, 17226.

— अवा ausschirren: स यन्निधापावयेद्यथा वाहनमवार्हति देवं तत् Cat.
 Br. 4, 8, 27. Sā. = अयः पतेत्.

— उप, उपार्हति P. 6, 1, 91, Sch.

— नि hinfallen, zu Grunde gehen: उप पृथ्वीदं किं च ज्ञायते ऽस्यां तदु-
 पजायते ऽथ पृथ्वीकृत्यस्यमेव तदुपजायते Cat. Br. 2, 3, 4, 9.

— निम् 1) herausfallen, mit dem abl.: देवात्सम्राट्क्षणात्वा निक्षो लो-
 काभिर्हृच्छति AV. 12, 4, 53. — 2) auseinandergehen: इयं (die Erde) वै नि-
 र्हतिरियं वै तं निरर्पयति यो निरर्हति Cat. Br. 7, 2, 1, 11.

— प्र, प्रार्हति P. 6, 1, 91, Sch.

— वि auseinandergehen: स विष्वङ्मार्हत्त्वं Cat. Br. 12, 7, 1, 1, 8, 3, 1.

— सम् zusammentreffen: वज्रो ह सम्पृच्छ्यातो तयो ह वज्रो न सम्-
 पृच्छेते Cat. Br. 1, 2, 5, 20.

2. अर्ह (अर्ह), अर्हति, अर्हन्, अर्हन्तुम् Dhātup. 28, 15. P. 3, 1, 36. 7, 4,
 11. 1) gehen (fehlt bei Einigen). — 2) schwach werden (von den Sin-
 nen). — 3) gerinnen, gefrieren (मूर्तिभावे) Dhātup.

— सम् med. P. 1, 3, 29. सम्पृच्छ्यते Sch.

1. अर्ह, अर्हति, अर्हन् herbeischaffen, sich verschaffen, erlangen, er-
 werben Dhātup. 7, 49. यदधमर्हति NAIGH. 5, 84. अर्हन्तुम्भुजा ऽस्त्राणि BHATT.
 14, 74. — caus. 1) dass. Dhātup. 33, 52. यद्वर्हितेनार्हयति कर्मणा ब्राह्म-
 णा धनम् M. 11, 193. सेभारानुपुनर्हयत्। ततः सेभतसेभारः। u. s. w. MBh.
 1, 8134. धनमर्हयेत् KATHA. 6, 36. भैरवेणाप्यर्हयिष्यामि पुनर्हयसप्रतिनि-
 याम् MBh. 3, 13. परस्वान्यार्हयत् BHATT. 17, 38. अर्हति (Sch. = प्र-
 हतुं यतते स्म) — वृत्तम् 13, 43. med.: तदर्थस्य INDR. 3, 7. अर्हति er-
 langt, erworben: विधिनाप्यर्हति धनम् M. 4, 193. वरु वितं मयार्जितम्
 N. 26, 4, 12. अर्थानामर्हति दुःखमर्हितानो च रक्षणे PANKAT. I, 179. HIT.
 II, 63. चिरार्जितं तपः R. 3, 14, 4. तपसार्जिता (गदा) 35, 42. VICY. 14, 19.
 PANKAT. I, 328. रणार्जितं द्रव्यम् JAGN. 1, 322. वीर्यार्जित R. 4, 3, 1, 46, 2.
 4, 23, 3. HIT. I, 96. II, 18. RAIGH. 2, 64, 3, 10. VID. 316. 318. 323. स्वयमर्जित
 selbst herbeigeschafft, erlangt, erworben M. 9, 209. JAGN. 2, 118. R. 2, 53,
 4. स्वार्जित dass.: इन्द्रलोके गतो राजा स्वार्जितेनैव कर्मणा (als Kapital
 betrachtet) R. 4, 43, 11. स्वार्जिते: कर्मभिः प्रभिः VICY. 13, 2. — 2) सेतो गु-
 णात्तराधानं MAHAVA, fucare WEST. — Vgl. 4. अर्ह.

— अति act. med. 1) hinüberschaffen, zulassen: स्वास्ति ह्येनमत्यर्हति
 स्वर्ग लोकमभि Ait. Br. 1, 11. तं तुरिये ऽत्यर्हति 2, 25. अति नो ऽर्हस्या-
 काशे नः कुर्वति (lass uns hinüber, mach' uns Platz!) स नास्तुतो ऽति-

अत्यर्हति — तास्तुतो ऽत्यर्हति 3, 42. — 2) wegschaffen, beseiti-
 gen: अथैनमुत्क्रातमेधमत्यर्हति Ait. Br. 2, 8.

— अत्यर्हति hinzufügen zu: यज्ञ एतद्यज्ञमप्यत्यर्हति Ait. Br. 7, 6.

— अनु loslassen: नान्वर्हति Cat. Br. 3, 7, 2, 4.

— अति hinzuthun: अथाशुन्युनरप्यर्हति Cat. Br. 11, 5, 9, 12.

— अय entlassen: तामवार्हति Cat. Br. 4, 5, 8, 11.

— अन्वव 1) entlassen nach einer bestimmten Richtung: तदेनं साव-
 समेवान्ववार्हति Cat. Br. 2, 6, 2, 17. — 2) heimsuchen: तमशनायापिपासा-
 भ्यामन्ववार्हति Ait. Up. 2, 1.

— समव zusammenlassen: मातृभिर्वत्सान्समवार्हति Cat. Br. 2, 5, 2, 16.
 1, 7, 1, 3.

— उद् herauschaffen: (भूमिः) यस्यां पूर्वं भूतकृतं स्रष्टव्यो गा उदानुजः
 (die Hdschr.: अानुचुः und अानुतुः) AV. 12, 1, 39.

— उप 1) hinzubringen, zulassen: अय वत्समुपार्हति Cat. Br. 14, 2, 1, 9. —
 2) caus. herbeischaffen, erwerben, erlangen: प्रभाते ऽन्यत्किंचिदुपार्हयि-
 ष्यामि PANKAT. 219, 7. यच्चास्य मुकृतं किंचिदुपार्हयिष्यामि M. 7, 95.
 अमेण यदुपार्हतिम् 9, 208. धनं च वरु — उपार्हतिम् MBh. 2, 1222. उ-
 पार्हितानां वित्तानाम् HIT. I, 147. चिरकालोपार्हितः प्रियमुहन्मे 26, 13.
 धर्मोपार्हितवृत्तिः PANKAT. 6, 5.

— प्र caus. gewähren, verschaffen: रेतः सेकं प्रार्हयति Nir. 3, 5.

2. अर्ह (अर्ह), अर्हति 1) gehen. — 2) stehen, feststehen. — 3) erwerben.

— 4) wohl auf sein (उर्जने) Dhātup. 6, 16.

3. अर्ह (अर्ह), अर्हते rösten Dhātup. 6, 17.

4. अर्ह = अर्ह, अर्हति (nur im partic. praes.); med. अर्हते, die 3te
 pl. ebenso, als wäre eine अर्हते vorauszusetzen, das sich nicht findet;

1. conj. aor. अर्हसे. — अर्हयति, auch med. (s. u. अर्हि). Vgl. ὁρῶ, ὁρῶν.

1) sich strecken, ausgreifen (im Laufe, vgl. ὁρᾶσθαι ἰόν) : उभे सिचौ य-
 तते भीम अर्हन् RV. 1, 93, 7. अधि ध्रुवोः किरते रेणुमृञ्जन् 4, 38, 7. दुर्वर्तुः
 स्मा भवति भीम अर्हन् 8. पिता यत्र उर्हतिः सेकमृञ्जन्से शग्म्येन मनसा
 दधन्वे 3, 31, 1. अर्हन्तो शरः 1, 172, 7. med.: स विरुह्या चतुरर्नीकं अर्हते
 5, 48, 5. येना सहेतु अर्हते स्वैरौचिषः (मरुतः) 3, 87, 5. — 2) erstreben,
 verlangen nach (Nir. 6, 21: अर्हतिः प्रसाधनकर्माः विशुक्ता राजानं सुवि-
 दत्रमृञ्जते RV. 2, 1, 8. तम् कृष्यैर्मनुष्य अर्हते गिरा 2, 5, 6, 15, 1. श्यानामस्त-
 रूष अर्हते नृन् 4, 122, 13. infin.: वेमि त्वा पूषन्मृञ्जसे वेमि स्तोतेव आधृणे
 8, 4, 17. — 3) partic. अर्हन्तः; a) herbeileitend: रथो न विवृज्जसान आ-
 युषु व्योनुष्वार्या देव अर्हति RV. 1, 58, 3. — b) erstrebend: विश आरी-
 राहुतमृञ्जसानम् 4, 96, 3. अर्हन्तः पुरुवार उक्थैरेन्द्रं कृषीत सदेन्यु
 हेतो 4, 21, 5. — Vgl. 1. अर्ह.

— अर्हि nach Etwas greifen, auf Etwas zueilen, med.: अर्हि द्विज्जानो
 त्रिवृदन्मृष्यते RV. 1, 140, 2. part. act.: अर्हि अय अर्हन्तो वहेयुः (अर्हाः)
 6, 37, 3.

— आ med. erstreben, herbeiwünschen: आ राधश्चित्रमृञ्जसे (1. pers.)
 RV. 5, 13, 6. आ वं अर्हन्त उर्जा व्युष्टिभिर्न्द्रं मरुतो रोदसी अनक्तन
 10, 76, 1.

— नि med. 1) erreichen, gewinnen: देव्या हेतारा प्रथमा न्युञ्जे RV.
 3, 4, 7. नि यामं चित्रमृञ्जते (मरुतः) 1, 37, 3. 10, 142, 2. — 2) erwischen,
 unter sich bringen: अर्ह कुत्समार्जुनियं न्युञ्जे RV. 4, 26, 1. योधो न शत्रून्म
 वना न्युञ्जते 1, 143, 5. वृत्रा भूरि न्युञ्जसे (2. pers.) 8, 79, 4. 1, 54, 2.